Goverment Degree College, Madhuban,
Pakridayal, East - Champaran
(B.R.A. B.U. Muzaffarpur)

B.A., Part - I, Hon./Sub.
Subject : Geography
Topic : वायु-राशि के स्रोत क्षेत्र
~~(Adven~~ (Source Area of Air-Mass)

By,
Dr. Md. Jamshed Alam
Assistant Professor

Email ID: Jamshedmit@gmail.com
Whatsapp No. : 9097179892

: वायु राशि के स्रोत - क्षेत्र :
(Source Area of Air Mass)

उपरोक्त आदर्श परिस्थितियाँ पृथ्वी पर जहाँ एक साथ मिलती हैं, वहाँ वायुराशियाँ उत्पन्न होती हैं। वायु-राशि वायुमण्डल का ही अंग है, वे प्रदेश जहाँ एक सा गुण धारण

करने वाली वायु राशियाँ उत्पन्न होती हैं। उसे वायु राशि के उद्गम-क्षेत्र कहते हैं।

वायु-राशि को निम्नलिखित उत्पत्ति-क्षेत्रों में बांट सकते हैं :—
(i) ध्रुवीय महाद्वीपीय स्रोत-क्षेत्र,
(ii) ध्रुवीय महासागरीय स्रोत-क्षेत्र,
(iii) उष्ण कटिबंधीय महाद्वीपीय स्रोत-क्षेत्र
(iv) उष्ण कटिबंधीय महासागरीय स्रोत-क्षेत्र,
(v) भूमध्यरेखीय स्रोत-क्षेत्र,
(vi) मानसूनी स्रोत-क्षेत्र।

(i) ध्रुवीय महाद्वीपीय क्षेत्र :—

इस क्षेत्र में यूरेशिया, उत्तर अमेरिका के हिमाच्छादित भाग आर्कटिक प्रदेश आते हैं। इस क्षेत्र में सर्वत्र प्रतिचक्रवातीय पवन-व्यवस्था रहती है, जब ग्रीष्म-ऋतु आती है तो महाद्वीपों के केवल उत्तरी भाग को जो केवल ध्रुवीय महाद्वीपीय वायु-राशि वाले होते हैं, उत्पत्ति क्षेत्रों की संज्ञा

प्रदान की जाती है।

(ii) ध्रुवीय महासागरीय क्षेत्र :—

इस क्षेत्र में अटलांटिक व उत्तरी प्रशान्त महासागर के क्षेत्र आते हैं। यहाँ शीतकाल में तेज हवाओं का प्रवाह रहता है।

(iii) उष्ण कटिबंधीय महाद्वीपीय क्षेत्र :—

यह क्षेत्र ऋतुओं के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है। जाड़े में केवल उत्तरी अफ्रीका तक ही सीमित रहता है, ग्रीष्मकाल में सम्पूर्ण अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी यूरोपीय आदि महाद्वीपों में फैला रहता है। साथ ही ग्रीष्मकाल में उत्तरी अमरीका का मिसीसिपी के पश्चिम का रूक्ष प्रदेश भी उष्ण कटिबंध क्षेत्रों में आता है।

(iv) उष्ण कटिबंधीय समुद्री क्षेत्र :—

इस क्षेत्र में हवाओं का वहन-क्रम प्रति चक्रवातीय है। धरातलीय

क्षेत्र में एकता का आधिक्य है। इस क्षेत्र में उपोष्ण प्रतिचक्रवात के प्रदेश भी सम्मिलित हैं। इसलिए इस भाग में मुख्यत: समुद्री क्षेत्र पाया जाता है।

(v) भूमध्यरेखीय क्षेत्र :— यह सन्मार्गी हवाओं का क्षेत्र है जिसमें धरातल की समता तथा हवाओं की अस्थिरता पायी जाती है। इस पेटी का अधिकांश भाग समुद्र पर होने से यहाँ की हवाओं में जलवाष्प अधिकता से मिलती है। इस भाग की वायु राशियों का स्वभाव प्राय: गरम होता है।

(vi) मानसूनी क्षेत्र :— यह दक्षिण-पूर्वी एशिया वाले क्षेत्र होते हैं। जाड़े की ऋतु में ध्रुवीय महाद्वीपीय क्षेत्रों से आती ठण्डी हवाएं एशिया के पर्वतीय क्षेत्रों के ऊपर होकर भूमध्यरेखा की ओर चला करती है। जाड़े की ऋतु ठंडी व शुष्क होती है, लेकिन ग्रीष्मकाल में ऊँचा तापमान,

ऊँची सापेक्षिक आर्द्रता, साथ ही अधिक वर्षा हुआ करती है। इस प्रकार के गुण रखने वाली वायु केवल इसी क्षेत्र में मिलती है।

इस प्रकार वायु राशियाँ अपने स्रोत-क्षेत्र से चलने के बाद दूसरे धरातलीय भागों पर अधिक समय तक नहीं रुका करती है क्योंकि ये अपने क्षेत्रों से चलकर करोड़ों कि.मी. की यात्रा करती हैं। इस यात्रा में विभिन्न स्थानों से ताप द्वारा आर्द्रता प्राप्त कर मूल गुणों में परिवर्तन कर देती है, लेकिन यह परिवर्तन धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। क्योंकि विशाल आकार लिए ये वायु राशियाँ अपने मूल स्थानों पर वापस आ जाती हैं। इस प्रकार ऋतुओं के आधार पर वायु राशियों के कुछ आदर्श क्षेत्र भी बन जाते हैं। जैसे - ग्रीष्मकाल में सहारा और विशाल उष्ण कटिबंधीय तथा उपोष्णीय सागरीय भाग तथा शीतकाल में उत्तर अमेरिका व यूरेशिया के स्थल भाग।

Next Class

वायु-राशियों में होने वाले परिवर्तन
(Change into Air-mass)

Md. Jamshed Alam